सुबह का स्वर्गीय मन्ना (1 दिसम्बर)

मत्ती 22:39 ... कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।

हम कभी भी नहीं चाहेंगे की हमारा पड़ोसी हमसे बुरी बातें कहें, ऊँची आवाज़ में बात करे या हमारे खिलाफ़ गालियाँ दे, इसलिए हमें भी ऐसा व्यवहार अपने पड़ोसी से नहीं करना चाहिए। परमेश्वर का कानून उन सबको जो उनकी वाचा के अन्दर आते हैं, यह आज्ञा देते हैं कि, वे एक शब्द भी अपने पड़ोसी के खिलाफ न कहें और न ही अपने पड़ोसी पर संदेह करें। और यदि परिस्थितयों की वजह से हमारे ज्ञान से परे, किसी भी प्रकार का संदेह पड़ोसी पर आ भी जाए तो हमारे नए मन को तुरन्त, नई सृष्टि के हित में, सन्देह के बदले में बारबार यही सुझाव देकर, कि हो सकता है, कोई झूठ या ग़लतफ़हमी की वजह से यह सन्देह हो रहा है, हमें इस संदेह से बाहर निकालने में मदद करनी चाहिए। `Z. '99-72` R2445:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (2 दिसम्बर)

प्रेरितों के काम 22:16 अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले...।

इस निवेदन में एक ऐसा मार्गदर्शन है जो कि, उन सभी के लिये अनुकरण करने के योग्य है जिन्होंने दूसरों को प्रभावित किया है और उनको सही मार्ग पर लाने का प्रयास कर रहे हैं। उनको उनसे बहुत जोर देकर कहना है कि वे पूरी तरह से आज्ञाकारी होकर, प्रभु यीशु और सच्चाई के लिए पूरी स्वीकृति देने में फुर्ती दिखाएँ। यदि अपनी विश्वास की आँखों से प्रभु को देखने और अपने आत्मिक कानों से

परमेश्वर की आवाज़ को सुनने के बाद भी इनका झुकाव तुरंत आज्ञापालन करने की ओर नहीं होता है, तो कुछ समय बाद, जब दुनिया, शरीर और शैतान उन्हें कहेंगे, अति रूढ़िवादी मत बनो, बीच का रहो, और ये सुझाव देंगे की प्रभु के लिए पूरा समर्पण मत करो, तब इनका झुकाव होने की संभावना और भी कम है। ये सारे शत्रु मिलकर यह सुझाव देंगे कि तुम्हारे पड़ोसी और मित्र तुम्हारे पीछे से तुम्हारे बारे में सोचेंगे, और तुम्हारी आशाओं और उम्मीदों के बीच परस्पर विरोध होगा और तुम्हारे मित्र ही शत्रु में बदल जाएँगे; बपतिस्मा या परमेश्वर के प्रति पूरा समर्पण तुम्हारे लिए बहुत महंगा पड़ेगा, इसलिए अपने कदम धीरे-धीरे बढ़ाओ। (ऐसा अवसर हमारे शत्रुओं को न मिले, इसलिए हमें परमेश्वर को जानने के बाद उनके प्रति समर्पण करने में देरी नहीं, फुर्ती करनी चाहिए) । `Z. '01-186` R2825:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (3 दिसम्बर)

प्रकाशितवाक्य 3:10 तू ने मेरे धीरज के वचन को थामा है, इसलिये मैं भी तुझे परीक्षा के उस समय बचा रखूंगा, जो पृथ्वी पर रहने वालों के परखने के लिये सारे संसार पर आने वाला है।

जो लोग अभी के समय धीरज के साथ सह रहे हैं और अपनी दौड़ दौड़ रहे हैं, उनके लिए एक खास पुरस्कार है, इस लौदीकिया चर्च के समय में, यद्यपि हम परीक्षा के इस समय में नहीं बच सकते, लेकिन चूंकि हम प्रभु यीशु के परोसिया (उपस्थिति) के समय में हैं, इसलिए हमारे लिए खास आशीषें हैं। हमें प्रभु यीशु मसीह का सहारा है, उनके निर्देश हैं, उनके आत्मिक भोजन हैं, जो कि उचित समय का अन्न है, और ये सब इस तरीके से है की हमसे पहले के चर्च के लोगों को ये आशीषें नहीं थीं। परन्तु ये सब से महान अनुग्रह के साथ साथ सारे संसार पे आनेवाले सबसे कठिन

परीक्षा की घड़ी भी इसी समय में आएगी। यदि कभी भी धीरज से सहने की आवश्यकता थी तो वह समय अब है। Z. '01-118` R2792:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (4 दिसम्बर)

लूका 11:13 अतः जब तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा॥

यदि परमेश्वर के सभी बपतिस्मा लिए समर्पित लोगों के जीवन का लक्ष्य एक ही बिंदु पर लाया जाये जिसका मुख्य उद्देश्य, उनकी सभी प्रार्थनाओं का बोझ, एक ही हो - परमेश्वर की पवित्र आत्मा को ज्यादा से ज्यादा मात्रा में पाना, पवित्रता की पवित्र आत्मा, सच्चाई की पवित्र आत्मा, मसीह की पवित्र आत्मा, संतुलित दिमाग की पवित्र आत्मा, यदि यही हम सब के जीवन का एकमात्र लक्ष्य हो तो अहा! ये कितनी बढियाँ आशीष होगी। यदि ऐसा हो तो उन्हें परमेश्वर के साथ जब तक वो दिन न आये (कि बड़ी मात्रा में हमें पवित्र आत्मा मिल जाये) कुश्ती लड़ते रहना होगा। परमेश्वर पर हमारी मजबूत पकड़ अवश्य इच्छित आशीषें लाएंगी। और परमेश्वर ने खुद अपनी पवित्र आत्मा को पाने का रहस्य अपने लोगों के सामने प्रगट किया है क्योंकि उनका उद्देश्य यही है कि, वे ज्यादा से ज्यादा अपनी पवित्र आत्मा अपने निज लोगों को आशीष में दें - लेकिन परमेश्वर इस आशीष को तब तक रोक कर रखते हैं, जब तक की उनके लोग इसकी कदर करना न सीखें, और गम्भीरतापूर्वक, पूरी ईमानदारी से, मन लगाकर पवित्र आत्मा की इच्छा न करें।

हमारे स्वर्गीय पिता अवश्य मांगने वालों को अपनी पवित्र आत्मा देंगे। `Z. '01-271` R2866:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (5 दिसम्बर**)**

यहोशू 24:15 ...तो आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे...; परन्तु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा नित करूंगा।

जो जिन्हें चाहे आदर दें, पर हमलोग जिन्होंने यह चख लिया है कि परमेश्वर दयालु हैं, हमलोग जो पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा उत्पन्न हुए हैं और फिर से जीवन में नयापन मिला है, परमेश्वर को जान पाएं हैं, हमें परमेश्वर को छोड़कर और किसी को भी भय या आदर नहीं देना है। परमेश्वर को ही आदर देते हुए हमें आँख मूँदकर सारा भरोसा उन्ही पर रखना है, और उन्ही पर पूरा भरोसा रखने का मतलब हुआ, वे जो भी मार्ग हमारे लिए तय करेंगे हम उस पर प्रसन्नता पूर्वक चलेंगे। और इस तरह से भरोसा करके चलते हुए हम हमेशा सन्तुष्ट रहेंगे, चाहे जो भी हिस्सा हमें दिखे, क्योंकि यह परमपिता का हाथ है जो हमारा मार्ग दर्शन कर रहा है। और आएं, हमें पूरा आश्वासन रहे कि इस तरह से सच्चे चरवाहे के पीछे चलने से अवश्य हम स्वर्गीय भेड़ों की झुण्ड में पहुँच जाएंगे। इन वादों के अन्दर हमें अभी से ही आनन्द, शान्ति और हृदय की आशीष मिल रही है, यहाँ तक कि इसके पहले कि हम स्वर्गीय नगर में पहुँचे, हमारे परदेश के घर में ही हम आशीष पा रहें हैं। `Z. '01-284` R2873:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (6 दिसम्बर)

नीतिवचन 25:28 जिसकी आत्मा वश में नहीं वह ऐसे नगर के समान है जिसकी शहरपनाह घेराव करके तोड़ दी गई हो॥

खुद से लड़ाई सबसे बड़ा युद्ध है, और हमारे पास परमेश्वर का वचन है इस लड़ाई के लिए, क्योंकि वह जो अपनी आत्मा (अपने मन, इच्छा, दिमाग) को वश में रखता है वह नगर को जीतनेवाले से उत्तम है, क्योंकि उसे इस लड़ाई में सही दिशा में अपने सही चरित्र का उपयोग करके, संयम के साथ वह सब कुछ जो अब तक सीखा है, अभ्यास में लाना होता है। जब हमें पापों से लड़ने और अपने स्वार्थीपन से लड़ते हुए ठीक-ठाक अनुभव हो जाता है, उसके बाद ही, हम हमारी आँखों का तिनका निकाल सकते हैं, हमारे दिलों पर राज कर रहे हमारे शरीर के क्रोध, ईर्ष्या, वैरभावों पर जय पा सकते हैं। इन असीम संघर्षों और कठिन अनुभवों से होकर जाने के बाद ही-हम अपने भाइयों की सहायता करने के लिए तैयार होंगे। और हम अपने पड़ोसियों की, उनकी मुश्किलों में सहायता करने में और उन्हें उनकी कमजोरियों पर जय दिलाने में मदद कर पाएँगे। `Z. '01-295` R2878:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (7 दिसम्बर)

1 पतरस 2:23 वह गाली सुन कर गाली नहीं देता था...।

ऐसा (गाली सुनकर गाली नहीं देना) इसलिए नहीं था क्योंकि उनके दुश्मनों को उनमें कुछ दोष मिल गया था जिसके कारण ठीक से और उचित रूप में उन्हें धिक्कारा जा सकता था और उनकी बुराई की जा सकती थी; और न ही इसलिये कि प्रभु यीशु के शत्रु इतने परिपूर्ण थे कि उनकी बुराई करने के लिये प्रभु यीशु को कुछ गलत

दोष मिला ही न हो; बल्कि प्रभु यीशु ने चुपचाप रहकर गाली इसलिये सुनी क्योंकि वे इतना ज्यादा पूरी तरह से दिव्य इच्छा के लिए समर्पित थे कि लोगों के सभी तानों और गाली गलौच को सुनने में सक्षम थे, और ये सब कुछ नम्रता और धीरज से सहने में सक्षम थे, और उन्हें ये याद रहता था कि उनका बुलावा इसी के लिए (मेम्ने की तरह बलिदान होने के लिए) था। और हाँ, प्रभु यीशु ने सचमुच ऐसा ही किया। प्रभु यीशु धीरज के साथ सहते गए और अपने अनुभवों से पाठ सीखते गए, वे खुद को हर कदम पे विश्वासी साबित करते चले गए, उन्होंने अपने सच्चे चरित्र का प्रदर्शन हर एक परिस्थिति में किया, लोगों के प्रति और उनकी अज्ञानता और अंधेपन के प्रति तरस खाया और सहानुभूति दिखायी और उन लोगों के प्रति अपने पिता का प्रेम दिखाया।`Z. '01-298` R2879:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (8 दिसम्बर)

यूहन्ना 15:18 "यदि संसार तुम से बैर रखता है, तो तुम जानते हो कि उसने तुम से पहले मुझ से बैर रखा।

जैसे हमारे प्रभु से लोगों ने बिना कारण बैर रखा, जहाँ तक संभव हो, ऐसा ही हमारे संग भी हो पाये। हमारा जीवन शुद्धता के इतने करीब हो उतना कि हमारे विचार, वचन और कर्म -- सभी में परमेश्वर की प्रसंशा दिखे, और हमारा प्रेम, सभी मनुष्यों के प्रति, खासकर विश्वास के घराने के प्रति दिखे; जिससे कि हमारे खिलाफ घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, घात करना इत्यादि जो भी हम पर उंडेला जाए, हम पूरी तरह से उसके लिए अयोग्य हो, जैसे की हमारे प्रभु यीशु मसीह थे। थोड़ी देर में जब कलीसिया महिमा में होगी और नए युग का शुभारम्भ हो जाएगा, तब जिन्होंने इस कलीसिया के सदस्यों के साथ बैर किया था, मुख्य रूप से इसलिए कि, क्योंकि वे शैतान के

द्वारा अंधें कर दिये गए थे, वही लोग कलीसिया के सामने झुकेंगें क्योंकि कलीसिया के लोग परमेश्वर के अभिषिक्त होंगें। और कलीसिया को उन्हें (जिन्होंने कलीसिया को सताया था) आशीष देकर और ऊपर उठाकर, उनके उत्साह को बढाकर, उन्हें क्षमा करके, और वापस परमेश्वर के स्वरुप और समानता में लाकर बहुत ही प्रसन्नता मिलेगी। `Z. '01-300` R2881:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (9 दिसम्बर)

याकूब 1:12 धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षा में स्थिर रहता है, क्योंकि वह खरा निकलकर जीवन का वह मुकुट पाएगा जिसकी प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करने वालों से की है।

यदि हम अपनी याददाश्त में इस सच्चाई को हमेशा रखें कि इस जीवन की प्रत्येक परीक्षा, दुःख और कठिनाइयाँ उन लोगों पर अवश्य आनी है जिन्होंने जीवित बलि की वाचा परमेश्वर के साथ बाँधी है और हमेशा ये याद रखें कि इन सभी परिक्षाओं, दुखों इत्यादि का उद्देश्य हमें जांचना है, हमारे प्रेम को परखना है और यह देखना है कि हमारा चरित्र धार्मिकता की जमीन में अच्छी तरह से जड़ पकड़ के दृढ़ हुआ है या नहीं और हमेशा ये याद रखें कि परिक्षाओं के कारण ही हम प्रेम के द्वारा इन सब गुणों में बढ़ेंगे, तब यह सारी परिक्षाएं और परेशानियां और लालसाएं हमें एक नयी रोशनी में ले जाएँगी, और बड़े तौर पर हमें एक अच्छी लड़ाई लड़ने में सहारा देंगी और उन पर जय पाने में मददगार होंगी। यह रोशनी पाकर हम कहेंगे कि - यदि इन छोटे से छोटे क्लेशों से ही परमेश्वर हमारे प्रेम को परख लेंगे और हमारे समर्पण को जाँच लेंगें, तो चाहे वे परिक्षाएं जितनी भी तुच्छ हों या कठिन हों, मैं

पूरी मेहनत से इन कठिनाइयों को अपने लिये लाभदायक अवसर और सहायक बनाकर प्रयोग में लाऊँगा ताकि मैं अपने परमेश्वर के सामने अपने प्रेम की परिपूर्णता और उनके निमित्त किये गए समर्पणों को प्रमाणित कर सकूँ या दिखा सकूँ। `Z. '98-41` R2258:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (10 दिसम्बर**)**

1 शमूएल 2:30 ...क्योंकि जो मेरा आदर करें मैं उनका आदर करूंगा...।

परमेश्वर अपने सेवा कार्यों के जिस भी छेत्र या विभाग में हमारे लिए अवसरों और मौकों का दरवाजा खोलकर प्रसन्न होते हैं, हमें फुर्ती से उनमें प्रवेश करना चाहिए। और पूरी शक्ति, जोश और उत्साह के साथ उनके उद्देश्यों और कारणों के लिए जिसके लिए उन्होंने हमें बुलाया है, जुट जाना चाहिए। यह परमेश्वर के स्वीकारे जाने की एक शर्त है। यदि हम इन सुअवसरों के प्रति आलसी और लापरवाह होंगे तो निःसंदेह वे हमसे ले ली जाएगी और दूसरों को दे दी जाएगी, क्योंकि परमेश्वर ने हमें एक स्वतंत्र इच्छा दी है जिसके द्वारा हम सही और गलत का निर्णय खुद ले सकते हैं और हमको परमेश्वर के कार्य करने का जो अवसर मिलता है उसके प्रति यदि हम कोई लापरवाही करने का निर्णय लेते हैं तो परमेश्वर हमारे निर्णय में कोई हस्तक्षेप नहीं करते हैं और न ही हमारी इच्छा के विरुद्ध जबरदस्ती हमसे अपने कार्यों को कराने के लिये कोई दबाव डालते हैं, क्योंकि परमेश्वर किसी और को हमारी जगह खड़ा करके अपने कार्यों को पूरा कराने में पूरी तरह से सक्षम हैं। इसलिए आओ हम परमेश्वर का सहायक बनने के विशेष अधिकार की प्रसन्नता से तारीफ़ करें, और खासकर उन महान सेवा कार्यों की प्रशंसा करें जिन्हे हमारे प्रभु और स्वामी

यीशु मसीह पूरा कर रहे हैं और जिनके साथ मेल-जोल रखने के लिए, उनकी दुल्हन और साँझा वारिस के रूप में हम बुलाये भी गए हैं। Z. '01-317 R2888:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (11 दिसम्बर)

नीतिवचन 23:26 हे मेरे पुत्र, अपना मन मेरी ओर लगा, और तेरी दृष्टि मेरे चाल चलन पर लगी रहे।

इसलिए हमने हमारा हृदय, मन, हमारी इच्छा, मर्जी, परमेश्वर को सौंप दी है, जो कि हमेशा उनकी दिव्य इच्छा को जानने की कोशिश करती है, दिव्य विचार को पकड़ने की कोशिश करती है ताकि वचनों में भी और कार्यों में भी उसका आज्ञापालन कर सके; और जिस अनुपात में हमारा नया मन इस दशा में पहुँचता है, उसी अनुपात में हमारे जीवन के हर मामले में एक नयेपन की शुरुआत होती है--आकांक्षा में, आशाओं में, भावुकता में, विचारों में, चेष्टाओं में। यही कारण है कि दिव्य मर्जी और दिव्य योजना को सभी विश्वास करनेवालों पर प्रगट किया जाता है। ताकि उसके ज्ञान के द्वारा उन्नति करके, इन बातों के बारे में सोचकर, अपने मन को दिव्य योजना और दिव्य मर्जी से भर के, पूरी तरह से बदल देने वाला प्रभाव हमारे जीवन के प्रत्येक मार्ग को बढ़ा देगा। `Z. '01-324` R2891:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (12 दिसम्बर)

नीतिवचन 23:7 क्योंकि जैसा वह अपने मन में विचार करता है, वैसा वह आप है। ...

यह वचन...प्रभु के समर्पित लोगों को एक कारण देता है कि, क्यों उन्हें... अशुद्धताओं को ध्यानपूर्वक निचोड़कर बाहर निकाल देना है, और देखना है की ये अशुद्धता उनके हृदय में, विचारों में अंदर ही न आ पाये, ये महसूस करते हुए कि यदि ये अशुद्धताएं उनके अंदर प्रवेश कर गयीं तो, इसका परिणाम खुद को अधिक या कम अंश में अपवित्र करना ही होगा। जो भी सोच की पवित्रता को बनाये रखता है, उसे अपेक्षाकृत शब्दों और क्रियायों में पवित्रता को बनाये रखने में कम प्रयास करना पड़ता है। अशुद्धता चाहे इधर से आये या उधर से आये - दुनिया से आये या शरीर से आये या शैतान से आये - इसका सबसे पहला हमला सोच पर ही होता है; और यदि विचार में ही अशुद्ध ख्यालों को मार के भगा दिया जाये, तो वहीं पर विजय हासिल हो जाती है। और यदि विचारों में ही अशुद्ध ख्यालों को मार के न भगाया जाये, तो इसके परिणाम क्या हो सकता है ये हम नहीं जान सकते, जैसा की प्रेरित याकूब ने याकूब 1:5 वचन में घोषणा की है “फिर अभिलाषा (किसी भी तरह की स्वार्थी इच्छा) गर्भवती (जब विचार में आ जाती है) होकर पाप को जनती (पापी शब्दों या कर्मों को बढ़ाती है) है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है। “Z. '01-325 R2891:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (13 दिसम्बर**)**

प्रेरितों के काम 7:60 ...यह पाप उन पर मत लगा...

[यहाँ पर पास्टर रसल की व्याख्या में कुछ वाक्य जोड़े गए हैं।]

सभी आत्मिक इस्राएलियों के लिए स्तिफनुस के द्वारा कहे गये इन वचनों से बढ़ियाँ से सबक सीख पाना कितनी बड़ी आशीष होगी। यहाँ पर सबक यह है कि, यदि हम

किसी भी मामले के नतीजे को अच्छा समझकर स्वीकार करें और यदि हम ये महसूस करें कि परमेश्वर की दूरदर्शिता के अंतर्गत हम उन नतीजों तक पहुंचाएं गए थे, तब जो लोग उन नतीजों तक हमें पहुँचाने के लिए दिव्य दूरदर्शिता के अन्तर्गत केवल एक माध्यम ही थे, हम उनके लिए अति उदारता और बहुत करुणा की भावना के साथ तब भी सोच पाएँगें, जब हो सकता है कि वे लोग वास्तव में अनिच्छुक उपदेशक (भले इरादों के बिना उपदेश देने वाले) हों या युसूफ के भाइयों की तरह वास्तव में उलटे परिणाम का इरादा रखते हों। (युसूफ के जीवन में उसके भाइयों ने गलत इरादों से उसे बेच दिया था लेकिन उनके इरादों के विपरीत वास्तव में युसूफ ने राजा के यहाँ ऊँचा पद पाया और जब पूरी दुनिया में अकाल पड़ा तो अपने भाइयों को माफ़ किया और उनकी सहायता की)। जो लोग अपने दैनिक जीवन के मामलों और उसमे सक्रिय परमेश्वर की सामर्थ्य के कारण मिले नतीजों को इस नजरिये से अपनाने में सक्षम हैं, मतलब अपने शत्रुओं को माफ़ करके उनपर दया करने में सक्षम हैं, वे लोग, जैसा की प्रेरित कहते हैं --"हमेशा मसीह के द्वारा जय पाने के कारण आनन्द का उत्सव मनाते हैं"। और इस तरह के लोगों के पास शैतान के विरुद्ध या शैतान के सेवकों के विरुद्ध किसी भी कड़वाहट या गाली- गलौज़ के लिए कोई भी जगह नहीं होती है। Z. '01-331 R2896:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (14 दिसम्बर**)**

मत्ती 5:7 "धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।

सभी को यह पता नहीं है, लेकिन यह एक तथ्य है कि, सबसे मुख्य गुण जिसका मनुष्य अभ्यास कर सकता है, और जो गुण अपने आप में सबसे ज्यादा आशीषें लाता है वो है परमेश्वर के दया, करुणा और परोपकार जैसे गुणों का अभ्यास करना।

इन गुणों में से परमेश्वर दया के इस गुण पर बहुत जोर देते हैं, उनकी ये घोषणा है कि, ज्ञान में या अनुग्रह में हमारी कुछ भी सिद्धियां हो सकती हैं, लेकिन अगर हममें दया का यह एक गुण नहीं है तो हम कभी भी परमेश्वर के स्वीकार योग्य नहीं हो सकते - यदि हममें दूसरों के लिये दया नहीं है, तो स्वर्गीय पिता भी हम पर दया नहीं करेंगे। हम इस दया को महज एक बाहरी रूप से दिखाने वाली क्षमा और परोपकार की अभिव्यक्ति न समझें, इसे दृढ़ करने के लिये हमारे प्रभु ने इस बात को मत्ती 6:15 वचन में समझाया है की "और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा"। ...केवल दयावन्त ही दया प्राप्त करेगा। और अगर हममें दया नहीं है, तो यहोवा के हाथों में हमने सब खो दिया है। क्योंकि स्वभाव से हम क्रोध के बच्चे थे, जैसे की दूसरे हैं, और न्यायपूर्ण दण्डाज्ञा में आते हैं। Z. '01-332; '00-70 R2896:3; R2587:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (15 दिसम्बर**)**

भजन संहिता 23:1 यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी।

परमेश्वर अपने लोगों को भेड़ बुलाते हैं जो कि चरित्र का एक महत्वपूर्ण चिन्ह है जिसे परमेश्वर ने अपने लोगों पर प्रगट किया है। सबसे अधिक ध्यान देने योग्य चरित्र, जो की भेड़ का है, वो है -- आज्ञापालन, विनम्रता, और भेड़ का अपने चरवाहे पर और उसकी देखभाल पर पूरा भरोसा करना। जो सच्ची भेड़ होगी वो अपने चरवाहे की सबसे हलकी आवाज़ को भी सुन लेगी। इसका मतलब है, वो अपने हृदय में परमेश्वर के वचनों को बहुमूल्य समझती है, परमेश्वर की सभी सुरक्षा, ख्याल और मार्गदर्शन को ध्यान से समझने की कोशिश करती है और परमेश्वर के साथ निजी भाईचारा और वार्तालाप करने का प्रयत्न करती है जो की, एक भेड़ का अधिकार है।

इसलिए जो परमेश्वर में बना रहता है, वह कभी भी नहीं भटकेगा। वे कभी भी नहीं, ज़रा भी अपने मार्ग से नहीं भटकेंगे। `Z. '02-365` R3116:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (16 दिसम्बर**)**

1 राजा 18:21 … "तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे, यदि यहोवा परमेश्वर हो, तो उसके पीछे हो लो; और यदि बाल हो, तो उसके पीछे हो लो"। …

हमारे पास एक पारस पत्थर होना चाहिए, जो कुछ ऐसे मामलों में हमारे दिमाग को निर्णय लेने में सक्षम बनाए, और हमें जल्दी आत्मिक निर्णय लेने में मदद करे। यह पारस पत्थर "पिता की इच्छा" होनी है। ताकि किसी भी सवाल के तहत जब हम पिता की मर्जी जानने की कोशिश करें तो तुरन्त उनकी मर्जी जानते ही वैसा ही करें जो वह चाहते हैं। हमें सही फैसला लेने की क्षमता बढ़ानी है, और हमेशा सही फैसला लेना है। परमेश्वर की इच्छा क्या है यह जानने के लिए हमें कुछ अनुभव और अनुशासन चाहिए, लेकिन जितनी जल्दी हम ये कोशिश करनी शुरू करेंगें, उतनी ही जल्दी निपुण हो जायेंगें। जितना ज्यादा प्रभावशाली ढंग से हम खुद को परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए तैयार करेंगें और उनकी इच्छा को करेंगें, और उनकी इच्छा करने के लिए तत्परता दिखाएंगे और हम तत्परता दिखाकर यह जतायेंगें की हमें परमेश्वर की मर्जी पूरी करके प्रसन्नता मिलती है, उतना ही ज्यादा बढ़िया से और जल्दी से हम पाएंगे, कि, हमारे चरित्र सही रास्तों पर स्थापित हो रहे हैं। `Z. '02-42` R2950:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (17 दिसम्बर)

फिलिप्पियों 2:12, 13 इसलिये हे मेरे प्रियो, जिस प्रकार तुम सदा से आज्ञा मानते आए हो, वैसे ही अब भी न केवल मेरे साथ रहते हुए पर विशेष करके अब मेरे दूर रहने पर भी डरते और कांपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ। क्योंकि परमेश्वर ही है जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है।

यह परमेश्वर ही थे जिन्होंने हमें मसीह यीशु में उद्धार दिया है, छुड़ौती दी है। परमेश्वर ने ही हमें अपने निकट खिंचा है और धार्मिकता के मार्ग पर चलने के लिए सभी जरूरी अनुग्रहों को देने का वादा भी किया है। और इससे भी ज्यादा प्रभु यीशु के जीवित बलिदान वाले मार्ग में उनके पदचिन्हों पर चलने के लिए जो अनुग्रह चाहिए उन्हें भी हमें देने का वादा परमेश्वर ही ने किया है। इसीलिए, अब बहुत ही ज्यादा सावधानी से, डरते और काँपते हुए हमें अपने उद्धार का कार्य पूरा करने का प्रयत्न करते रहना है। हमें ये हमेशा महसूस करना है कि, परमेश्वर ने हर जरूरत के समय आवश्यक अनुग्रह देने के लिए हमें अपने सिंहासन के पास आने का विशेषाधिकार दिया है। और हमें ये दृढ़ भरोसा रखना है कि, धार्मिकता की ओर किया गया हमारा सर्वोत्तम प्रयत्न परमेश्वर के लिए ग्रहणयोग्य है, और हमारे प्रयत्नों को जिन्हें हम प्रभु यीशु की धार्मिकता के मूल्य में, उनपर विश्वास करके दिखाते हैं, उन्हें परमेश्वर स्वीकार करते हैं। `Z. '97-147` R2154:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (18 दिसम्बर)

इब्रानियों 13: 6 "प्रभु, मेरा सहायक है, मैं न डरूंगा; मनुष्य मेरा क्या कर सकता है।"

जीवन में सही रास्ते पर चलने के लिए यह जरूरी है की मनुष्य में से सब प्रकार का भय, जो कि हमारे लिए फंदा बन जाता है, पूरी तरह से निकाला जाये। जैसे जैसे कष्ट आएँ, परीक्षाएँ हों, परेशानियाँ आएँ, इन सब का सामना सही आत्मा यानि क्लेश में आनंद की आत्मा से करने के लिए और सभी प्रकार के क्लेशों को आनंद की ही बात समझने के लिए, हमारे प्रभु की आज्ञा यह है कि, हमें केवल यहोवा से डरना है, नश्वर लोगों से नहीं। धर्मी लोग सिहं की तरह निडर, कबूतर की तरह सौम्य, और मेम्ने की तरह नम्र होते हैं। यह विचित्र मेल केवल सच्चे मसीहियों में ही पाया जाता है, और हमें संदेह है कि ऐसा मिश्रण शायद ही किसी और में मिले। `Z. '02-45` R2953:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (19 दिसम्बर)

1 राजा 20:11 ..."जो हथियार बान्धता हो वह उसके समान न फूले जो उन्हें उतारता हो"।

सहनशक्ति की परिक्षा परमेश्वर के प्रति ईमानदारी के लिए की गई सबसे कठिन परिक्षा है, जो चुने हुए चर्च के सदस्यों पर आती है, जो कि, प्रभु यीशु मसीह की देह के के अंग है। यह एक ऐसी परिक्षा है जो प्रत्येक के सदगुण और अनुग्रह को आंकने और दर्ज करने के लिए ली जाती है, और क्रूस का एक भी सैनिक विजय की

बहादुरी का पुरस्कार का मुकुट इस परिक्षा में खरा उतरे बगैर नहीं पा सकता है। अभी के समय के संघर्ष में, जैसे की बाकि लड़ाईयों में होता है, हमारे शत्रु का हर सम्भव यही प्रयास रहता है कि वह अचानक से हमें अचरज में डालकर आक्रमण करे और परमेश्वर के लोगों को पराजित कर दे, इसलिए ऐसे समय में केवल एक ही तैयारी हमारा बचाव कर सकती है--हमें किसी भी आपातकालीन स्थिति से बचने के लिए सतर्कता के साथ प्रार्थना करनी है और आत्मिक युद्ध के सभी हथियारों को सदा पहन कर रखना है, यानि सच्चाई और सच्चाई की आत्मा को सदा पहन कर रखना है । `Z. '94-155` R1656:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (20 दिसम्बर**)**

2 तीमुथियुस 2:15 अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्ज़ित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।

इस वचन में पढ़ाई का बहुत ज्यादा महत्व है, और केवल पढ़ाकू लोगों को ही सकेत मार्ग में परमेश्वर की दिव्य मंजूरी और स्वीकृति मिलेगी। अपने आप को परमेश्वर के ग्रहणयोग्य बनाने के लिए पढ़ो --उपदेशों को पढ़ो; कैसा आचरण करना चाहिए वो पढ़ो, अपने आचरण को उपदेशों के साथ तालमेल में रखने के लिए पढ़ो, सिय्योन की शान्ति और समृद्धि में बढ़ोतरी कैसे हो सकती है, ये समझने के लिए पढ़ो और अपनेआप को और दूसरों को गलतियां से और बुराई के जहर से बचाने के लिए पढ़ो, दुनिया की आत्मा से बचने के लिए पढ़ो। क्रूस के वफादार सिपाही के कर्तव्यों को

निभाने के लिए पढ़ो, जो कि देखने में मुश्किल लगता है, और सबसे बहादुरी का कार्य है। `Z. '02-318` R3097:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (21 दिसम्बर**)**

प्रकाशितवाक्य 5:2 ...योग्य कौन है?

हे प्रियों, जब हम ये महसूस करते हैं की अभी तक परमेश्वर ने हमें अपनी योजना की पुस्तक को देखने के योग्य समझा है, जिसकी मुहर हमारे धन्य प्रभु यीशु, जो की यहूदा के गोत्र के सिंह हैं, उनके द्वारा हमारे लिये खोली गयी है, तो आइए, हम उस पुस्तक में देखना जारी रखने के लिये और उनकी कानून की अदभुत बातें पढ़ने के लिए, सब बातों में विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता और वफादारी के द्वारा अपनी योग्यता को साबित करें। दिव्य सत्य के प्रकाश को चमकाने की धन्य सेवा में कुछ हिस्सा पाने के योग्य गिने जाने का जो महान विशेषाधिकार हमारा है, आइए, हम उसे कम न आंके। आइए, हम अपने आप को सबसे दुर्लभ मूल्य के गहने, वास्तव में हीरे साबित करें, जो सत्य के प्रकाश को दिल से ग्रहण करके सुंदरतापूर्वक दूसरों में फैलाये; और विश्वसनीय रहकर सबसे कठिन दबाव को जो की परमेश्वर की अनुमति से हमपर आ सकते हैं, धीरज से सहते रहें । क्योंकि, यदि हम थोड़े में विश्वासयोग्य रहेंगे तभी हम ठीक समय पर मसीह के साथ सामर्थ्य और बड़ी महिमा में राज्य करने के योग्य गिने जायेंगे। Z. '02-333 R3104:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (22 दिसम्बर)

2 तीमुथियुस 2:21 यदि कोई अपने आप को इन से शुद्ध करेगा, तो वह आदर का बरतन, और पवित्र ठहरेगा; और स्वामी के काम आएगा, और हर भले काम के लिये तैयार होगा।

यदि कोई मनुष्य परमेश्वर से आदर पाने की इच्छा रखता है, तो उसे परमेश्वर के द्वारा निर्धारित किये हुए मार्ग यानि विनम्रता के मार्ग को खोजने में असफल नहीं होना चाहिए क्योंकि परमेश्वर केवल विनम्र लोगों पर ही कृपा करते हैं। यदि तुम परमेश्वर के काम आने योग्य बरतन और आदर का पात्र बनना चाहते हो, तो परमेश्वर के सामर्थी हाथों के नीचे खुद को विनम्र करो तो परमेश्वर तुम्हें उचित समय में ऊँचा करेंगें। इन दोनों में से किसी एक के लिए भी हड़बड़ी न करना, बल्कि तुम्हारे हाथों को जो भी कार्य मिलता है, अपनी पूरी सामर्थ्य से उसे करो, अपने मिटटी के घड़े (इस नाशवान शरीर) को शुद्ध करना शुरू करो और ऐसा निरंतर करते जाओ ताकि यह हमारे स्वामी के कार्यों में उपयोग में आने के योग्य बनते जाए। `Z. '02-319` R3097:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (23 दिसम्बर)

नीतिवचन 15:23 और 25:11 ...और अवसर पर कहा हुआ वचन क्या ही भला होता है! और जैसे चान्दी की टोकरियों में सोने के सेव हों वैसे ही ठीक समय पर कहा हुआ वचन होता है।

जब हम उन लोगों से बात करें जिनके पास सुनने के कान हों और वे परमेश्वर के मार्गों के बारे में जिज्ञासा रखते हों, तब हमें यह याद रखना है कि, मनुष्य के जीवन में बहुत बड़े से बड़े संकट आते हैं, महत्वपूर्ण समय आते हैं, जिसमे समय से कहा हुआ एक ही शब्द किसी और समय के कहे हुए सौ या हज़ारों शब्दों की तुलना में या किसी और परिस्थिति में कहे हुए अनेक शब्दों की तुलना में ज्यादा बहुमूल्य हो सकता है, ज्यादा प्रभावशाली हो सकता है। हमें परमेश्वर के सेवा कार्यों के लिए तुरन्त तैयार होना होगा चाहे हमारे लिए वो सही समय हो या असमय हो ।हमें हमारे भाइयों के लिए हमारा जीवन ख़ुशी से सौंप देना होगा। हालाँकि हमें पहचानना होगा कि, यह असमय हमारे लिए है या दूसरों के लिए है, और हम जब दूसरों की सेवा करने के लिए हर समय इच्छुक रहते हैं, चाहे वह हमारे लिए असमय ही क्यों न हो, तो भी उनके लिए वह समय उपयुक्त होना चाहिए। हम अनुचित समय में चाहे सुसमाचार ही क्यों न हो, नहीं बाँट सकते, चाहे वो समय फिर हमारे लिए कितना भी उपयुक्त क्यों न हो। `Z. '02-381` R3124:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (24 दिसम्बर**)**

मत्ती 1:21 …तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उन के पापों से उद्धार करेगा।

सुसमाचार युग का संदेशा हम तक भेजने के लिए और हमारे उद्धारकर्ता के जन्म की तैयारी से जुड़े हर छोटी-बड़ी घटनाओं पर जब हम ध्यान करते हैं, जिन्हें परमेश्वर ने अपनी दिव्य प्रावधान के तहत हमारे लिए दिया है, तो ये हमारे विश्वास को दृढ़ करने में सहायता करता है। जब हम हमारे अतीत में किये गए हर छोटे-बड़े, परमेश्वर के द्वारा रखे गए देखभाल को महसूस करते हैं, तो यह हमारे विश्वास को एक

आधार देता है ताकि हमें परमेश्वर के ज्ञान पर भरोसा हो और उनकी योजना से जुड़ी सभी तैयारियों पर भी हमारा भरोसा बढ़ता है--जो की अभी भी भविष्य के लिए है--जब बेथलेहम में जो जन्मे थे (प्रभु यीशु), उन पर केन्द्रित सभी बहुत ही बड़ी और बहुमूल्य प्रतिज्ञाएँ पूरी होंगी। जब हम परमेश्वर की दिव्य योजना से जुड़े बड़े-बड़े मामलों में परमेश्वर की दिव्य देखभाल को महसूस करते हैं, तो उनकी यह योजना हमारे विश्वास को हमारे निजी और व्यक्तिगत मामलों के लिए भी परमेश्वर की सुरक्षात्मक देखभाल पर आश्रित रहने के लिए हमें प्रोत्साहित करती है। `Z. '00-8` R2556:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (25 दिसम्बर**)**

लूका 2:10, 11 तब स्वर्गदूत ने उन से कहा, "मत डरो; क्योंकि देखो मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं जो सब लोगों के लिये होगा। कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्ता जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है।

हालाँकि हम इस बात से राजी नहीं हो सकते कि, 25 दिसंबर हमारे प्रिय उद्धारकर्ता के जन्मदिन मनाने का उचित दिन है, बल्कि हमें जरूर इस बात पर जोर देना है की, उनका जन्मदिन पहले अक्टूबर को है (Volume 2, p.54) -- फिर भी, क्योंकि उन्होंने ये इच्छा नहीं रखी है की हमको उनका जन्मदिन मनाना चाहिए, इसलिए सभी के लिए इतनी महत्वपूर्ण घटना यानि प्रभु यीशु के जन्मदिन को किस दिन मनाया जाता है यह बात ज्यादा मायने नहीं रखती है। इस दिन पर, जिसमें आम तौर पर प्रभु यीशु का जन्मदिन मनाया जाता है, हमारा उन सभी के साथ शामिल

होना उचित हो सकता है जिनके मन परमेश्वर की ओर प्यार और प्रशंसा के रवैये में और उद्धारकर्ता की ओर हैं। छोटी सी यादों को साल के इस समय में एक दूसरे के साथ बाँटने की आदत हमें विशेष रूप से उपयुक्त लगती है। परमेश्वर हर अच्छे और उत्तम उपहार के दाता है। वह हमें लगातार दे रहे हैं और हम लगातार उनके पास से ले रहे हैं; लेकिन परमेश्वर के सभी तोहफों में से जो हमारे लिये सबसे महत्वपूर्ण तोहफा है, वह है उनके प्रिय पुत्र का तोहफा हमारे उद्धारकर्ता के रूप में। Z. '03-457 R3290:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (26 दिसम्बर)

यहोशू 1:7 इतना हो कि तू हियाव बान्धकर और बहुत दृढ़ होकर ...।

आत्म विश्वास में मजबूत बनो और साहसी बनो। बहुत तरह के साहस पाए जाते हैं--एक तरह का यह है कि, लोग अभिमानी और आत्म-निर्भर होकर अपना साहस बढ़ाते हैं। दूसरे तरह का यह है कि, लापरवाही की आत्मा से जन्मे लोग जो की परिस्थिति की परेशानियों को नहीं समझ पाते हैं। परन्तु जो साहस परमेश्वर की तरफ से मिलता है और जिसे सभी आत्मिक इस्राएली अपने पास रखने के लिए खोजते हैं, वह साहस शांतिपूर्वक स्थिरता के साथ सभी परिक्षाओं और परेशानियों के रास्तों में समझदारी से काम लेता है और अपनी कमजोरियों को इन अवसरों में पहचानता है, इसलिए परमेश्वर पर विश्वास के द्वारा ऐसे लोगों को उचित सहारा मिलता है -- वे दिव्य वादों पर भरोसा करते हैं जो कि उन्हें प्रभु और उनकी सामर्थ के द्वारा मजबूत बनाते हैं। Z. '02-285 R3079:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (27 दिसम्बर)

1 यूहन्ना 5:21 हे बालकों, अपने आप को मूरतों से बचाए रखो।

हमें हमारा विश्वास नेताओं / प्रतिनिधियों / प्रचारकों पर नहीं, परन्तु परमेश्वर पर रखना है। इसका मतलब ये नहीं है कि हमें परमेश्वर के प्रतिनिधियों पर विश्वास नहीं करना है, उन्हें स्वीकार नहीं करना है, क्योंकि यदि हम परमेश्वर का इतिहास देखें, तो उन्होंने अपने लोगों के साथ जो भी आचरण करते थे, पुराने नियम में और नये नियम में, वे हमें ये दर्शाते हैं कि, उन्हें मानव प्रतिनिधियों को चुनकर अपना कार्य कराने में प्रसन्नता होती है। परमेश्वर अपने निज लोगों को अपने चुने हुए प्रतिनिधियों के द्वारा पढ़ाते हैं, मार्गदर्शन करते हैं और अपने लोगों को अनुग्रह पर अनुग्रह से और ज्ञान पर ज्ञान से बढाते हैं। यहाँ पर ये सबक सिखाया जा रहा है कि परमेश्वर अपना कार्य सम्भालने के लिए पूरी तरह से समर्थ हैं, और जबकि हमें उनका मार्गदर्शन मानव एजेंसियों के द्वारा मिलता है, फिर भी हमारा भरोसा मनुष्य पर नहीं होना है, न उनके ज्ञान पर, न उनकी शक्ति पर, परन्तु हमारा पूरा भरोसा परमेश्वर के ज्ञान, उनकी शक्ति और उनके द्वारा मिले मार्गदर्शन पर होना चाहिए। Z. '02-284 R3078:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (28 दिसम्बर)

भजन संहिता 110:7 वह मार्ग में चलता हुआ नदी का जल पीएगा; इस कारण वह सिर को ऊंचा करेगा॥

हम अपने प्रभु से, हमारे गुरु और सिर (मुखिया) से यह मांगना चाहते हैं कि, परमेश्वर हमें ज्यादा से ज्यादा आशीषें दें, जिससे कि ताजा उत्साह के साथ हम ईमानदारी से और प्रसन्नता से जीवन के अनुभवों की नदी के जल को पीने का प्रयास कर सकें और वह ज्ञान पा सकें जो हमको परमेश्वर की सेवा के लिए थोड़ी देर में तैयार कर दे, और जो हमें अभी की परमेश्वर के सेवा के कार्यों के लिये भी योग्य बनाकर तैयार कर दे, और हमें जीवन की सभी परखने वाली परिस्थितियों और परिवर्तनों में परमेश्वर के अनुग्रह से उनकी प्रशंशा करने में सक्षम बना दे, ताकि हम अपनी देह और आत्मा में जो की परमेश्वर की ही है उनकी महिमा कर पाएं। आइये हम सब, जैसे जैसे इस नदी का जल पीते जाएँ, छोटे पक्षियों से सबक लें, जो जब जल पीते हैं, तो बार बार सिर उठाकर जैसे कि परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं। आइये हम भी लगातार हमारे परमेश्वर को धन्यवाद देते जाएँ - जीवन के अनुभव के हर स्वाद के लिए, हर सबक के लिए, हर परीक्षा के लिए - और इन सब को अपनी आत्मिक उन्नति के लिए उपयोग में लाते जाएँ । Z. '02-14 R2936:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (29 दिसम्बर**)**

सभोपदेशक 11:6 भोर को अपना बीज बो, और सांझ को भी अपना हाथ न रोक; क्योंकि तू नहीं जानता कि कौन सफल होगा, यह या वह या दोनों के दोनों अच्छे निकलेंगे।

सभी परमेश्वर के लोग, जिस अनुपात में सच्चाई के दास बनना चाहते हैं, उन्हें लगातार प्रत्येक अवसर पर सचेत रहना है, और उम्मीद करनी है कि, वे प्रभु यीशु के मार्गदर्शन में उनके कार्यों में उपयोग हों। जहाँ कहीं भी हमें प्रभु और उनके वचनों

के प्रति भक्ति नजर आये, हमें भी सचेत रहकर मदद के लिए हाथ बढ़ाना चाहिए। हमें जो आशीषें मिली हैं उन्हें बाँटने के लिए सचेत रहना चाहिए, और पुरे सम्मान के साथ यही हमारे जीवन का मुख्य व्यवसाय होना चाहिए उन सब के लिए जिन्होनें अपना, जीवन राजाओं के राजा के लिए समर्पित कर दिया है। Z. '02-71 R2965:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (30 दिसम्बर**)**

भजन संहिता 65:11 अपनी भलाई से भरे हुए वर्ष पर तू ने मानो मुकुट रख दिया है;...।

आइये जैसे हम बीते हुए साल में परमेश्वर के इंतज़ामों के अंतर्गत मिले मार्गदर्शन के बारे में सोचें, परमेश्वर की करुणा और दया, हमारे उनके प्रति विश्वास और भरोसे को आने वाले साल के लिए और बढ़ा दे। परमेश्वर का एक सही बच्चा जब बीते हुए साल की ओर उचित रीती से मुड़कर देखता है तो ये उसे न केवल बीते हुए साल के लिए धन्यवाद देने के योग्य बनाता है, बल्कि वो अपना सिर ऊपर उठकर आने वाले साल की ओर भी ये सोचकर देखता है कि, जब उसने पहली बार यकीन किया था तो उसकी तुलना में उसका उद्धार निकट है। और वह यह महसूस करता है कि, यदि हम लगातार अपनी इच्छाओं को, जीवन को, हमारे सब कुछ को, परमेश्वर के ज्ञान और स्नेह से भरी देखभाल के प्रति समर्पित करते जाएँ तो जिसने हममें भला कार्य आरम्भ किया है वो उसे पूरा करने में सक्षम भी है और उस कार्य को हममें पूरा करने की इच्छा भी रखता है। Z. '00-365 R2738:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (31 दिसम्बर)

भजन संहिता 116:12-14 यहोवा ने मेरे जितने उपकार किए हैं, उनका बदला मैं उसको क्या दूं? मैं उद्धार का कटोरा उठाकर, यहोवा से प्रार्थना करूंगा, मैं यहोवा के लिये अपनी मन्नतें सभों की दृष्टि में प्रगट रूप में उसकी सारी प्रजा के सामने पूरी करूंगा।

साल का अंत आनेवाले साल के लिए संकल्पों को लेने का एक बहुत अच्छा समय है। प्रिय भाइयों, आइये हम सब बहुत सारे अच्छे संकल्प करें - हम क्या बनना चाहते हैं, क्या करना चाहते हैं, क्या पीड़ा उठाना चाहते हैं, प्रभु से मेलजोल रखने के लिए - इन सब बातों के लिए आइये हम संकल्प करें। ताकि परमेश्वर के अनुग्रह से यह साल हमारे अभी तक के जीवन के सभी सालों में सर्वोत्तम वर्ष ठहरे - सबसे बड़ी आशा का वर्ष, सबसे बड़े प्रयासों का वर्ष, और परमेश्वर के अनुग्रह से स्वयं को बलिदान करने में सबसे ज्यादा सफलताओं का वर्ष ठहरे जिससे कि हम दुनिया और उसकी आत्मा पर जय पा सकें, खुद को और शरीर की अभिलाषाओं को हरा सकें, विरोधी शैतान का सामना कर सकें, और हमारे प्रभु की महिमा कर सकें और उनके लोगों को आशीष दे सकें। Z. '99-286 R2551:5 आमीन